ने रेजोल्यूशन और बिल इन दोनों को एक में मिला दिया है । मैं आपके जरिये उनसे अर्ज करना चाहता हूं . . .

श्री सभापति : आप तो कह चुके ।

श्री राजनारायण : हम अपने ऊपर चेक नहीं रखना चाहते । कौल साहब, रेजोल्यूशन और बिल को एक में न मिलायें ।

श्री महेश्वर नाथ कौल : नहीं, मैंने नहीं मिलाया ।

श्री राजनारायण : यह रेजोल्यूशन है और अगर इस हाउस से रेजोल्यूशन पास हो जाता है, तो गवर्नमेंट को इस हाउस से पासशुदा रेजोल्यूशन को एक्सेप्ट करना होगा प्रेसिडेंट को देखना होगा । हमारे लिये कहीं इसका कोई आबलिगेशन नहीं है कि लोक सभा को यह कहें कि लोक सभा इसको एप्रूव करे । सारा कांस्टीट्यूशन देख लिया जाए । I am ready to discuss the thing.

श्री सभापति : मेरे खयाल में जरूरत से ज्यादा बहस हो गई है वक्त से पहले हो रही है । मैंने तो कहा है कि इस मामले एक पर इनडिपेंडेंट रेजोलयूशन माननीय सदस्य भेज सकते हैं । जो साहबान भेजना चाहते हैं और जिन लफ्जों में भेजना चाहते हैं भेजें, मैं देखूंगा कि एडमिट कर सकता हूं या नहीं कर सकता हूं और अगर उसमें एकाध शब्द को बदलने की जरूरत होगी, तो वह कह दूंगा कि ऐसा बदल दिया जाय, उस पर देखूंगा कि एडमिट करूं या नहीं । आप जो भेजना चाहते हैं, वह मेरे पास भेज दें ।

श्री राजनारायण : मैंने एक भेज दिया है ।

श्री सभापति : मैं और सदस्यों से भी कहता हूं कि वह भेजना चाहें तो भेज दें ।

RE. A POINT OF PRIVILEGE

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, अब हमारा सवाल यह है कि . . .

श्री सभापति : इसमें नहीं ।

श्री राजनारायण : इसमें नहीं । I was in possession of the House when . . .

MR. CHAIRMAN: You seem to be in eternal possession of the House.

MR, CHAIRMAN: You seem to be in eternal possession of the House.

श्री राजनारायण : उस दिन जब इस पर बहस हो रही थी तो सदन की बैठक उठ गई और डिप्टी चेयरमैन साहिबा ने कहा हम उठ रहे हैं, दूसरा दिन मिलेगा । चागला साहब से इस सम्बध में मैं सवाल कर रहा था । अब मुझे वह सवाल फिर करना है । छागला साहब 4 सवालों का उत्तर नहीं दे पाए, इसलिये मैं आपके जरिये चागला साहब से पूछना चाहता हूं कि स्वेतलाना को . . . *(Interruption)* जरा सुना जाय ।

SHRI M. M . DHARIA (Maharashtra): Sir, on a point of order . . .

श्री राजनारायण : सरकार की ओर से . . .

SHRI M. M. DHARIA: . . . may I know under what rules are we having this discussion by Mr. Rajnarain at this hour?

SHRI RAJNARAIN: I am doing everythink according to the rules.

SHRI M. M. DHARIA: This is not at all according to rules.

MR. CHAIRMAN: This is not proper.

श्री राजनारायण : तो आप हमको कह दें । मैं तो अर्ज कर रहा हूं कि मैं सदन के पजेशन में था । उस दिन की प्रोसीडिन्ग को देख लिया जाय । देखिये धारिया साहब आप भी कानून समझें, हमको भी समझाएं । मैं

[श्री राजनारायण]

चेयरमैन साहब के जरिये यह अर्ज कर रहा हूं कि सदन में बेकार हल्ला मत करें आप लोग। प्रोसीडिंग्ज यहां लिखी हुई है, प्रोसीडिंग देख ली जाय। स्वेतलाना से संबंधित क्वेश्चन्स हो रहे थे। वह फाइनल नहीं हुआ था।

श्री सभापति : देखिये राजनारायण जी, आप मुझ से मिल लीजिए और इस बात को मुझे समझा दीजिए। मैं इस वक्त प्रोसीडिंग्ज देख नहीं सकता हूं, मुझे दूसरे काम करने हैं।

श्री राजनारायण : इसलिये मैं आपसे अर्ज कर रहा हूं कि इसी के लगे आप मौका दीजिए कि वे जवाब दें।

श्री सभापति : मैं उनको जवाब देने का मौका नहीं दे सकता। वे आपको कोई जवाब नहीं दे सकते, जब तक मैं प्रोसीडिंग्ज न पढ़ लूं। मुझे मालूम नहीं था कि आप हाउस के पजेशन में थे। आपका पजेशन में रहना बहुत ही मुसीबत मालूम होता है। I now go on to the next item.

श्री राजनारायण : श्रीमन, मैं आपसे इजाजत लेकर इस सदन को सूचित कर रहा हूं कि चागला साहब ने जो गलत बयानी की है, उस पर विशेषाधिकार का सवाल हमारा उठेगा। हम नोटिस दे रहे हैं नोटिस ! देखिये दो तरीके हैं। जो चीज "इन दि आई आफ दि हाउस", सदन के सामने, जो चीज घटती है, उसका प्रोसिजर यह है, प्रोसीडिंग से . . .

श्री सभापति : नहीं। आप मुझसे मिलियेगा।

श्री राजनारायण : श्रीमन, इसमें आपसे मिलने की जरूरत नहीं है। प्वाईन्ट सुन लिया जाय। मैं ऐसी कोई बात नहीं कह रहा, हूं जो आउट आफ पौइन्ट हो। मेरी अर्ज यह है कि जो घटना, जो इन्सिडेंट, इस सदन में, इस हाउस में, घटेगा, उसके बारे में "डाउनराइट" प्रिविलेज मोशन होता है, तो उसके लिये चेयर से मिलने की कोई जरूरत नहीं होती है या कोई ऐसी घटना होती है, जिसके बारे में चेयर को एसरटेन करना होता है कि इसमें कहां तक दम है, कहां तक ताकत है, तो वह अपने चेम्बर में मेम्बर को काल करता है। हमने इस सदन में चागला साहब को कहा था कि डा० राम मनोहर लोहिया ने पब्लिक स्टेटमेंट किया है इलाहाबाद में . . .

श्री सभापति : इस वक्त आप क्या कर रहे हैं क्यों आप प्रिवलेज मोशन मूव कर रहे हैं ?

श्री राजनारायण : हां, मैं प्रिवलेज मोशन मूव कर रहा हूं। चागला साहब ने . . .

श्री सभापति : मैंने आपको इजाजत नहीं दी है, प्रिवलेज मोशन के वास्ते।

श्री राजनारायण : मैं आपको नोटिस दे रहा हूं।

श्री सभापति : मैं नही जानता था कि आप यहां मुझे नोटिस देंगे। आप मुझे यहां नोटिस न दें।

श्री राजनारायण : मेरी अर्ज सुन ली जाए। हम अगर आउट आफ वे रहेंगे और आप कहेंगे तो हम बैठ जायेंगे। मुझे जो भी आज्ञा होगी, मानूंगा, । मैं आपको केवल चेयरमैन ही नहीं मानता हूं . . .

श्री सभापति : मेरी इच्छा की पूर्ति करा लेते हैं।

श्री राजनारायण : . . . हां, हम इच्छा की पूर्ति करा लेते हैं। आपका हुक्म मानने में हमें दुख होता है, हम आपकी

ख्वाहिश की पूर्ति करते हैं। हमने इस सदन में इस बात को अर्ज किया कि डा० राम मनोहर लोहिया साहब रेस्पान्सिबिल आदमी हैं, पार्लियामेंट में दल के नेता हैं, उन्होंने यहां तक कहा कि वही स्वेतलाना हमको मास्को में मिल चुकी हैं, वही इलाहाबाद में गई और डा० लोहिया साहब से . . .

SHRI M. M. DHARIA: On a point of order. We do not know it. If a privilege is to be raised, under Rule 187 it is very clear that subject to the provisions of these rules, a Member may, with the consent of the Chairman, raise a question involving a breach of privilege. Whether the consent has been obtained by Mr. Rajnarain, we do not know.

MR. CHAIRMAN: He has given notice of a privilege motion, but he is raising the point now. Since Mr. Chagla is here, he can explain it and the matter may end. That is why he is doing it.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं यह अर्ज कर रहा था कि मैंने इसी सदन में चेयर की इजाजत से चागला साहब और पूरे सदन के सम्मानित सदस्यों को बता दिया था कि स्वेतलाना इलाहाबाद में डा० राम मनोहर लोहिया से मिली थी, डा० राम मनोहर लोहिया कोई मामूली आदमी नहीं हैं—यह गांधी जी का वाक्य है, मेरा नहीं है। मैं तो कुछ और कहता। और इसलिये डा० लोहिया ने पब्लिक स्टेटमेंट किया कि स्वेतलाना को जिस ढंग से यहां से जाना पड़ा वह उचित नहीं है, वह भारत के सम्मान के विरुद्ध है। एक कोमल स्त्री के साथ जबर्दस्ती की जा रही है। यहां तक बात स्वेतलाना ने कही है कि मुझे लोग यहां रहने नहीं दे रहे हैं। डा० लोहिया ने कहा "You fight it out" उसने कहा "Life is not so simple" यह स्वेतलाना का जवाब था। हम लोगों को इसी तरह की एक घटना का और पता है इसलिये लोहिया साहब इस मामले में ज्यादा जोर नहीं दे पाये। इससे पहले मार्गो स्किनर का मामला हो चुका है। मार्गो स्किनर हमारे एक मन्थली मैगजीन "मैनकाइन्ड" में एडिटर थीं और उनको पुलिस जबर्दस्ती उठाकर अमेरीका ले गई। उससे पहले जब लालबहादुर जी यहां गृह-मंत्री थे, उन्होंने हमसे कहा था कि सात दिन का मौका दीजिए मैं देखूंगा। लेकिन जैसा मैंने कहा इसी बीच उनको जबर्दस्ती उठा कर यहां से ले गये। तो डा० लोहिया के मन में था कि उसको भी बुला कर रखें। लेकिन इस खयाल से कि शायद सरकार उसी तरह से जबर्दस्ती करे उन्होंने कहा "यू फाइट इट आऊट" और उसने कहा "लाइफ इज नाट सो सिम्पल"। श्री चागला साहब इस बात की जानकारी लें, सरकार में संबंधित मंत्रियों से और सरकार के दूसरे लोगों से कि क्या स्वेतलाना से यह नहीं कहा कि यहां की जलवायु, यहां की आबहवा, गरम है ? आप एक सर्द मुल्क की रहने वाली हैं। यहां आपको बहुत तकलीफ होगी। हमारा और रूस का आपस में रिश्ता खराब होगा। दूसरे, जो आपके बच्चे हैं, इस वक्त रूस में हैं, आप यहां रह जायंगी तो उन बच्चों का क्या होगा ? तीसरी बात, शुरू शुरू में तो अगर कोई इस तरह आ कर के शरणार्थी के तौर पर रहता है तो लोग उस पर ज्यादा खयाल नहीं करते मगर आप स्टीलिन की पुत्री हुई, कुछ समय आप रहने लगेंगी तो उसके बाद अनेक प्रकार की डिफिकल्टीज, अनेक प्रकार की चीजें आयेंगी। यह सब सरकारी प्रवक्ता लोगों के जरिये स्वेतलाना को बराबर कहा गया और सरकारी प्रवक्ता के कहने पर रूसी एम्बेसी ने उसका जो वीसा का पीरियड था उसको एक्सटेन्ड किया। यह क्यों एक्सटेंड कराया गया क्योंकि स्वेतलाना कहती थी मैं यहां रहूंगी। सू.कन यहां के लोग कहते थे, नहीं तुम यहां से जाओ, तुम्हें यहां से कई बातों के कारण जाना जरूरी है।

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI M. C. CHAGLA): Sir I protest against this abuse of the procedure of the House. The day before yesterday I faced this House for one hour. The Deputy Chairman allowed the discussion to go on for one hour. I had tried to answer every question that was put. Now, my friend, Mr. Rajnarain, is trying to protract the debate by asking further questions and carrying on the discussion. I do not know under what procedure this is being done. If there is a privilege motion, I am prepared to face it. If I have made any incorrect statement I am prepared to explain it, but now to continue the debate which ended the day before yesterday really I do not know under what rule this is being done.

श्री राजनारायण : ठीक है, मैं खत्म कर रहा हूं । मुझे आपके जरिये एक ही अर्ज करनी है श्री चागला से कि उन्होंने इस सदन को गुमराह किया है, जो हमने फैक्ट्स दिये हैं, उनको छिपाने की कोशिश की है और जो बयान निकाला गया है वह गलत है। हम प्रिवलेज मोशन लिख कर देंगे ।

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—*contd.*

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, I would like to make the first point that winds of change are blowing in India and the Congress in its *post mortem* of the election has not yet come to realise what changes have already take place or what changes may take place in the future, The entire Address of the President does not reflect the change in the correlations of the forces in India because the people of India have rejected this reactionary Congress caucus that has been ruling in India for the last 20 years, a reactionary caucus that did not and do not serve the interests <j? the people, that did not and oa not intend to serve the interests of the people, a reactionary caucus that serves and wants to serve the interests of a narrow stratum only, a section of the bourgeois landlords and the toreign imperialists, it has been in their service. [THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. BHARGAVA) in the Chair.]

The Address of the President does not reflect any change; it only signifies that they want to proceed along the old beaten path. It is true that the people of India are on the march; t is true that they have not yet founi out the alternative path; it is true that utilising the discontent cf the people against the Congress Swatantra Party has been abL secure a good amount, a sizeable amount, of the electorate, on to their side, to swing a good portion of the electorate on to its side. That is a reactionary party. In rejecting the Congress, the people have not yet found the democratic forces and a democratic path; a portion of the elec torate has gone over to the Swatantra Party or to the Jana Sangh: The Swatantra Party is for the untrammel led operation of the vested interests and they want to openly plump for the protection of the foreign imperia lists like any other satellite country in Latin America. Theirs is an open declaration. They say, we must openly align and espouse the cause of the imperialists and be under their pro tection. The Congress only wants to do the same thing, is doing the thing—it is hobnobbing with the im perialists, surrendering the national interests to the imperialists, align- I ing themselves with the j imperliailists throwing overboard policy of non-alignment which they are mouthing merely in words, if which perhaps nothing remains in fact. Only under a smoke-screen of non-alignment, they are precisely pursuing their policy in order to hoodwink people. The Swatantra Party say; us do it openly. The Congress says, no, let us do it under a screen, behind the screen, so that the people can be bluffed and hoodwinked. That is the difference between the two parties.

Now,, I would like to make tl f point again that the President's Ad-, dress is a petty, philistine rigmarole / containing nothing new. It is said